सक्सेस मिरर

वर्ष : 6
अंक : 66
जुलाई : 2015

सफलता का कैप्सूल

Visit us at : www.pdgroup.in

इस अंक में...

9 | परोपकार कभी निरर्थक नहीं जाता
11 | समसामयिकी घटना संग्रह
12 | समसामयिकी संक्षिप्तकियाँ

19 | आर्थिक घटना संग्रह

- प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के नियमों में ढील को कैबिनेट की मंजूरी
- अमरीका के फेडरल रिजर्व ने 5 अन्तर्राष्ट्रीय बैंकों पर 5.7 अरब डॉलर का जुर्माना लगाया
- भारतीय स्टेट बैंक का विदेशों में लेनदेन के लिए डिजिटल भुगतान कंपनी पेपाल से समझौता

23 | राष्ट्रीय घटना संग्रह

- जे. जयललिता ने 5वें कार्यकाल के लिए तमिलनाडु की मुख्यमंत्री के पद की शपथ ली
- केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने पीएसएलवी कार्यक्रम के विस्तार को मंजूरी प्रदान की
- भारतीय वायुसेना के 'मिराज 2000' विमान ने यमुना एक्सप्रेस वे पर लैंडिंग की

26 | अन्तर्राष्ट्रीय घटना संग्रह

- ब्रिटेन आम चुनाव में कंजरवेटिव पार्टी को 331 सीटों के साथ बहुमत
- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चीन, मंगोलिया और दक्षिण कोरिया की छह दिवसीय यात्रा सम्पन्न
- भारत–चीन सीमा के नजदीक स्थित नीलोंग घाटी को पर्यटकों के लिए फिर से खोला गया

30 | खेल खिलाड़ी

- मुम्बई इंडियंस टीम ने जीता आईपीएल–8 का खिताब

35 | विज्ञान समाचार
37 | महत्वपूर्ण तथ्य संग्रह

लेख

40 | पर्यावरण लेख–धातु विषाक्तता और जनस्वास्थ्य
41 | कैरियर लेख–उत्तर प्रदेश चकबंदी लेखपाल भर्ती, 2015
सामान्य जानकारी
83 | बकरी क्षेत्र में अनुसंधान विकास एवं प्रसार शिक्षा के बढ़ते चरण–एक दृष्टि में
86 | प्रथम पुरस्कृत तार्किक प्रतियोगिता
87 | तार्किक प्रतियोगिता क्रमांक 63 का परिणाम
89 | रोजगार अवसर

हल प्रश्न-पत्र

43 आर.आर.सी. (गोरखपुर) ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2014
49 केन्द्रीय विद्यालय संगठन लोअर डिवीजन क्लर्क परीक्षा, 2014
स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया के सहयोगी बैंक लिपिकीय संवर्ग परीक्षा, 2015
58 तार्किक योग्यता
61 General English
64 संख्यात्मक अभियोग्यता
68 सामान्य ज्ञान
71 मार्केटिंग योग्यता एवं कम्प्यूटर ज्ञान
73 इलाहाबाद उच्च न्यायालय नैत्यिक लिपिक परीक्षा, 2014

- सम्पादक : महेन्द्र जैन
- रजिस्टर्ड ऑफिस : 2/11-ए, स्वदेशी बीमा नगर, आगरा–2
- सम्पादकीय ऑफिस
  1, स्टेट बैंक कॉलोनी, वन चेतना केन्द्र के सामने
  आगरा–मथुरा बाईपास, आगरा–282 005
  फोन– 4053333, 2531101, 2530966
  फैक्स– (0562) 4053330, 4031570
  ई-मेल: सम्पादकीय: publisher@pdgroup.in
  कस्टोमर केयर: care@pdgroup.in
- दिल्ली ऑफिस
  4845, अंसारी रोड, दरियागंज,
  नई दिल्ली–110 002
  फोन– 011-23251844/66
- हैदराबाद ऑफिस
  1-8-1/B, आर. आर. कॉम्प्लेक्स
  बाग लिंगमपल्ली, हैदराबाद–500 044
  फोन– 040-66753330
  मो– 09391487283
- पटना ऑफिस
  पीरमोहनी चौक, कदमकुआँ
  पटना–800 003
  फोन–0612-2673340
  मो–09334137572
- कोलकाता ऑफिस
  28, चौधरी लेन, श्याम बाजार
  कोलकाता– 700 004
  फोन– 033-25551510
  मो– 07439359515
- लखनऊ ऑफिस
  B-33, ब्लंट स्क्वायर, कानपुर
  टैक्सी स्टैण्ड लेन, मवइंया,
  लखनऊ– 226 004
  फोन– 0522-4109080
  मो– 09760181118

सर्वाधिकार सुरक्षित, प्रकाशक की पूर्व लिखित अनुमति के इस मैगजीन का कोई भी भाग न तो पुनरुत्पादित किया जाएगा और न किसी भी रूप में, जैसे इलेक्ट्रॉनिक, मेकेनीकल, फोटोकॉपीइंग, रिकॉर्डिंग अथवा अन्य प्रकार स्टोर किया जाएगा. हालांकि इस संस्करण में प्रकाशित सूचनाओं के सही होने का हरसम्भव प्रयास किया गया है, फिर भी न तो प्रकाशक व न अन्य कोई कर्मचारी किसी भी त्रुटि अथवा छूट के लिए उत्तरदायी होगा. अस्वीकृत रचनाओं को लेखकों को वापस भेजने के लिए उनके साथ स्वयं का पता लिखा हुआ लिफाफा मय उपयुक्त डाक टिकटों के प्राप्त होगा. रचना के देर से पहुँचने अथवा रास्ते में खो जाने की कोई जिम्मेदारी नहीं ली जाती. पत्रिका में लेखकों द्वारा प्रेषित बयानों, विचारधाराओं तथा प्रकाशित विज्ञापनों की कोई जिम्मेदारी 'सक्सेस मिरर' की नहीं है.

परोपकार कभी निरर्थक नहीं जाता

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

परोपकार के अवसर प्रायः आते हैं, जो उन्हें पहचान लेते हैं, वही उनका सदुपयोग कर पाते हैं.

प्राणीमात्र द्वारा किए जा रहे कर्मों को दो भागों में बाँटा जा सकता है–

(1) सफल कर्म

(2) अ-फल कर्म

वे कर्म जो अपना परिणाम लाते ही हैं, 'सफल कर्म' कहलाते हैं इसके विपरीत जिन कर्मों का भविष्य में कोई परिणाम नहीं होगा, जो भूत की समाप्ति रूप ही सम्पादित हुए हैं, वे अ-फल कर्म हैं. प्रायः दुनिया के सभी लोगों के सभी कर्म सफल ही होते हैं. मात्र वे कर्म जो उच्च आत्मा की निःसंग, निर्लेप अवस्था से घटित होते हैं, जो पूर्णतः निष्काम होते हैं कामना शून्य होते हैं, वे ही कर्म अ-फल होते हैं जिनका परिणाम भविष्य में भोगा नहीं जाएगा. बुद्धि-जीवियों व ज्ञानियों के कर्म ही अ-फल होते हैं. अन्यथा इस सृष्टि में सभी जीवों के द्वारा किए जा रहे हर शुभ-अशुभ कर्म का फल उन्हें भोगना ही पड़ता है.

पुनः कर्म को हम दो भागों में समझेंगे–

(1) पुण्य कार्य–परोपकार रूप

(2) पाप कर्म–पीड़ाजनक

वह कर्म जो कर्म के कर्ता को, उससे सम्बन्धित अन्य लोगों को व उपस्थित वातावरण को पुनीत बनाए, प्रसन्नता दे, वह 'पुण्य कर्म' है. परोपकार रूप है. इसके विपरीत जिस कर्म को करने वाला मलिन इरादों से भरा हो, जिसके परिणामस्वरूप कर्म का कर्ता, सम्बन्धित लोग व उपस्थित वातावरण तनावपूर्ण बन जाए, बोझिल व दुःख की तरंगों से भर जाए, वह कर्म 'पाप कर्म' है. पीड़ादायक कर्म है.

''सुचिण्णा कम्मा सुचिण्णा फला भवंति।
दुचिण्णा कम्मा दुचिण्णा फला भवंति।''

अर्थात् जो कर्म सुन्दर भावनाओं से किए गए हैं उनका फल भी प्रसन्नतादायक होता है तथा जो कर्म दुष्टतापूर्वक किए गए हैं. उनका फल भी दुःखरूप ही होता है.

इस दुनिया में ऐसे बहुत कम लोग होंगे जो कर्म विज्ञान की इन उपर्युक्त बातों को नहीं जानते होंगे. फिर भी क्या कारण है कि इंसान को पाप कर्म करने में झिझक महसूस नहीं होती. इंसान ऐसा क्यों सोचता है कि वह छुप-छुप कर पाप करेगा, तो किसी को भला क्या पता चलेगा? पाप को कितना भी छुपाया जाए वह अपना फल तो प्रकट करेगा ही. पुराने अनुभवी लोग कहा करते थे कि–

''पाप छुपाया ना छुपे, छुपे तो मोटा भाग।
दाबी-दूबी ना रहे, रुई लपेटी आग॥''

रुई में आग को दबाना चाहने पर भी क्या भला आग दबी रहेगी, वह तो रुई को ही जलाकर भस्म कर देगी. इसी प्रकार कोई व्यक्ति कितनी भी चतुराई से पाप कर ले, पापकृति छुपती नहीं.

इंसान को पाप कर्म करते समय सुविधा प्रतीत होती है, उसके भीतर पनप रही सुखों की लालसा, स्वार्थसिद्धि की कामना, शोर्टकट में सब कुछ पा जाने की चाहत उससे पाप कराती जाती है. स्वार्थी इंसान औरों को कष्ट देने में सुख मानता है. जब लोग परेशान होकर रोते हैं, तब उन्हें देख-देख कर उसे मजा आता है. वह यह भूल जाता है कि हर ध्वनि की प्रतिध्वनि अवश्य होती है. कर्म लौट कर कर्ता को मिलता ही है. ऐसे लोगों को जब पाप कर्म का फल मिलता है, जब उन्हें सफलता के मार्ग में बाधाएं, बीमारी, अपमान, प्रिय का वियोग, आकस्मिक दुर्घटनाएं भोगनी पड़ती हैं, तब ये लोग चिल्लाते हैं, औरों को दोषी करार करने में जुटे रहते हैं, अपने लिए सहायता व दयालुता की भीख माँगते हैं, तब इन्हें भी परोपकारी में शरणा दिखलाई पड़ता है.